बुरका

अभिशाप या वरदान..!!

" ये महिलाएं उन्नति नहीं कर सकती, ये तो पिछड़ी हुयी हैं, इन पर आत्याचार हो रहा है, ये अपने अधिकार से वंचित हैं...."

कुछ इस तरह के उद्‌गार आए दिन आप बुरका धारन की हुयी महिलाओं के संबंध में ज़रूर सुनते होंगे | आप के मन में भी यह विचार आता होगा की आखिर इस्लाम इन महिलाओं को बुरका पहनने पर सख्ती क्यों करता है ??

हम सब नारी को शक्ति एवं सुरक्षा देना चाहते है, लेकिन नारी की सुरक्षा करने का कारण क्या है ? क्यों हम नारी को सुरक्षा देना चाहते हैं ?? **आखिर किस बात का स्त्री को भय है** ???

कारण यह है की हम चाहते हैं स्त्री का शारिरिक सोशन, बलात्कार एवं शारिरिक छेड़छाड़ के रूप में ना हो, बल्कि उन्हें पुरी इज़्ज़त दी जाय, उनका सम्मान किया जाय, उन्हें उपभोग की वस्तु समझने की बजाय ये समझा जाय की वह एक इंसान है |

मगर हम सभी को यह बात पता होनी चाहिए की हम नारी को तभी सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं जब हमें यह ज्ञात हो जाय की नारी को ख़त्‌रा कब अथवा किन कारणों से होता है ? फिर इन कारणों अथवा

समस्याओं का समाधान क्या है ?
फिर हमें यह देखना पड़ेगा की इन समस्याओं का समाधान इस्लाम में क्या है ताकि हमें इस्लाम के बुरका परिधान करने का सिध्दांत समझ में आजाय |

स्त्री कब असुरक्षित होती है ?

१. स्त्री का घर से बाहर होना ः

आप इस बात से ज़रूर सहमत होंगे की नारी जब बाहर जाती है तो असुरक्षित होती है, लिहाज़ा इस्लाम स्त्री को अधिकतम काल घर में रहने का आदेश देता है और बाहर जरूरत पड़ने पर ही निकलने की अनुमती देता है | कुर्आन में अल्लाह तआ़ला कहता है "वे अपने घर में टिकी रहें" (सुरह अहज़ाब ३३ ः ३३)

आप कहेंगे की स्त्री घर में भी कहां सुरक्षित होती है ?
जी हां, आप स़ही़ह़ कह रहे हैं लेकिन ऐसा तभी मुमकिन है जब एक स्त्री, पुरुष के साथ अकेले हो !!

२. नारी और पर-पुरूष का अकेले होना ः

स्त्री को अगर घर में हानि पहुंचती है तो अधिकतम घटनाओं में इस की ज़िम्मेदार स्वयं स्त्री ही होती है |
आप कहेंगे वह कैसे ?? जब घर में कोई पुरूष नहीं होता और दरवाज़े पर बेल बजती है तो कई नारियां बाहर कौन है जाने बग़ैर दरवाज़ा खोल देती है, अक्सर नारियों की सुरक्षा इसी कारण खत्‌रे में पड़ जाती है और वे मर्द की दरिंदगी का शिकार हो जाती हैं |
इस्लाम का मार्गदर्शन यहां पर यह है ः "पराया मर्द और पराई औरत अकेले न हो जाय इसलिए की इन में तीसरा शैत़ान होता है" (अहमद) यानी अगर ये दोनों अकेले होजाएंगे तो मर्द के क़दम बहक सकते हैं और फिर वह औरत पर बल का उपयोग कर सकता है |
अक्सर यह देखा गया है की महिलाएं सरल, सभ्य और भोली होती हैं, वे मर्द के ग़लत़ इरादों को भांप नहीं पातीं, फिर अगर वह ग़लत़ आदमी को अकेले में मिल जाए तो वह उस के अकेलेपन का फायदा उठाता है, लिहाज़ा इस्लाम का मार्गदर्शन सरल एवं सुरक्षित है की अगर घर में कोई पुरूष नहीं है तो किसी भी पर-पुरूष को किसी भी कारण अंदर आने की अनुमती ना दिजाय |

३. बाहर अकेले जाना :

यह भी देखा गया है की स्त्री जब बाहर जाती है तो अकेली होती है, अगर भीड़ भाड़ वाले इलाके में अकेली जाय तो ठीक है, लेकीन समस्या तब होती है जब वह घर से दूर, या सुनसान इलाके में जाय, कुछ लोग इस का फायदा उठाते हैं और ऐसी महिलाओं को अपनी विकृत वुर्ती का शिकार बनाते हैं | इस्लाम यहां यह मार्गदर्शन करता है कि दुर इलाके या सुनसान इलाके में महिला अकेली न हो बल्कि उस के साथ उस के घर का कोई मर्द साथ हो | महिलाओं के लिए हदीस में आता हैं की

"उस महिला के लिये जो अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर इमान रखती है, जायज़ नहीं है की एक दिन व रात का सफर अकेले करे" (बुख़ारी व मुस्लिम)

४. नारी का सौम्य स्वर में बात करना :

औरत की अवाज़ में भी आकर्षन होता है, अगर आप कहते हैं "नहीं" तो हम आप से पुछना चाहेंगे, फिर हर तरफ़ नारी की आवाज़ क्यों है ? अक्सर आप

को फ़ोन पर किसी का फोन बन्द होने की खबर, या कवरेज क्षेत्र से बाहर है, कौन बतलाता है ?? ट्रेन के आने जाने की घोषणा कौन करता है ? यह सारे काम ज़्यादातर महिलाएं करती हैं इसलिए की स्त्री की अवाज़ में आकर्षन है, अगर वह सौम्य स्वर में वार्तालाप करे तो मर्द के हृदय में आशा जाग उठती है, वह इस महिला की तरफ़ आकर्षित हो जाता है और फिर इस महिला की सुरक्षा खतरे में पड़ जाती है|
अल्लाह तआ़ला कुरआन में स्त्रियों को स्पष्ट आदेश देता है ः “ (पर पुरूष से) तुम्हारी भाषा सौम्य न हो, ऐसा ना हो की जिन के हृदय में रोग है वह तुम्हारी आशा करने लगे, सीधी सरल भाषा का उपयोग किया करो ” (सुरह अहज़ाब ३३ ः ३२)

५. नारी का कम कपड़े पहनना ः

हम ने अब तक जितने कारण बाताए हैं उन सब कारणों में यह कारण सब से महत्वपूर्ण है, हम जानते हैं की मीडिया आपको यह बतलाता है की बलात्कार का महिला के कपड़ों से कोई संबंध नहीं, बल्कि उन महिलाओं का भी बलात्कार होता है जो पूरे कपड़े पहनी हुयी होती हैं, लेकिन हमारे देश का कोई भी सभ्य आदमी इस बात को हज़म नहीं कर पायेगा|

हमारे देश की संस्कृती रही है की नारी का सम्मान किया जाय और हमारे देश की नारी इस सम्मान का अधिकार भी रखती है, इसलिए की हमारे देश की नारी, पुरूष से किसी न किसी तरह पर्दा करती है, आप देख सकते है की इस देश की नारी, पुरूष को देखते ही घर के अंदर चली जाती है, या आपने सर पर से साडी का पल्लू नीचे तक खींचती है, या घूंघट से आपने सर को छुपाती है, ताकी पुरूष को उस का चेहरा नज़र ना आए, शायद इस देश के पूर्वज इस बात को भली भांति जानते थे की बलात्कार जैसी समस्या का समाधान सिर्फ यही है की नारी को पुरूष से परदा करना चाहिये | लिहाज़ा हमारे देशवासियों के लिए महिलाओं का पर्दा करना अथवा बुरका पहनना कोई आश्चर्य वाली बात नहीं है, बल्कि जो भारत की संस्कृती से परिचित है वह बुरके का समर्थन ही करेगा, लेकिन टेलीविजन एवं फिल्म के इस जगत में बहुत से भारतीय अपनी परंपराओं से दूर होगए हैं, परिणामस्वरूप जिन लोगों को बुरके का समर्थन करना चाहिए था उन के मन में भी बुरके के प्रति वो शंकाएं उभरती हैं जो मीडिया उन के सामने बार बार रखता है |

जिसे भारत के पूर्वजों ने अपनाया और इस्लाम ने जिसे बुरके के रूप में पेश किया इस पर्दे या बुरके के क्या फायदे हैं ???

इस्लाम में बुरके का आदेश

बुरके के फायदे जानने से पहले आप के लिए ये जान लेना ज़रूरी है की इस्लाम ने बुरके का आदेश किस प्रकार दिया है | इस्लाम ने नारी को अपना पुरा जिस्म डांपने का आदेश दिया है, उस ज़माने में कपड़े बहुत विरल थे आज की त़रह़ बुरका वग़ैरह न था तो औरतें अपने आप को चादरों से डांप लिया करती थी, फिर जब कपड़े काफी मात्रा में बनने लगे और बुरके से इस्लाम के आदेशों का पालन करना असान हो गया तो महिलाओं ने बुरके को पर्दे के त़ौर पर अपना लिया|

कुरआन में अल्लाह का आदेश है : आप इन मो'मिन औरतों से कहिये कि वे अपनी नज़रें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की रक्षा करें और अपनी सुंदरता को ज़ाहिर ना करें,[१] सिवाए उस के जो ज़ाहिर होता है[२]......... और अपने पांव ज़मीन पर मार कर ना चलें, ताकी उन की छुपी सुंदरता को लोग ताड लें और ऐ मु'मिनो! तुम सब मिल कर अल्लाह के समक्ष त़ौबा करो, ताकि तुम कामयाब हो जाओ (सुरह नूर : ३१)

ऐ नबी! अपनी बिवियों से, अपनी बेटीयों से और मु'मिन औरतों से कहिए कि अपनी चादरों का एक हिस्सा अपने उपर लटका लिया करें, यह इस बात के ज़्यादा क़रीब है की पहचान ली जाएं और उन्हें कोई तक़्लीफ़ ना पहुंचाए, अल्लाह बहुत बड़ा माफ करने वाला, बहुत रहम करने वाला है| (सुरह अहज़ाब ः ५९)

और जब तुम उन से कोई वस्तु मांगो तो परदे के पीछे से मांगो, ऐसा करने से तुम्हारे और उन के दिल ज़्यादा पाकीज़ा रहेंगे
(सुरह अहज़ाब ः ५३)

प्रेषित मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्ल्म फरमाते हैं ः नारी को पूरा छुपाया जाएगा इसलिए की अगर उसका परदा निकल जाय तो शैतान उसे घुरने लगता है | (तिर्मिज़ी)

बुरके के फायदे

१.छेड़ छाड़ से बचाओ :

बुरका किस तरह महिला को रोड़ साईड़ रोमिओ की छेड़ छाड़ से बचाता है ? इसे समझाने से पहले हम आप से एक प्रश्न पुछते हैं, मान लिजीए एक समस्या है उस के समाधान दो हैं, एक यह की आप यह जाने की समस्या की जड़ कहां

है और उस समस्या को जड़ से समूल नष्ट कर दें, दुसरा यह की समस्या उद्भावने पर इस प्रकार से उसे ख़त्म करे की समस्या बाक़ी तो रहे मगर कुछ देर के लिए आप को आराम मिल जाए और भविष्य में उस समस्या के उद्भावने की संभावना फिर हो, अब आप बतलाईए की आप कौनसा समाधान अपनायेंगे पहला या दुसरा ??

एक उदाहरण लिजीए ताकि बात अच्छी त़रह़ से समझ में आजाएः मान लिजीए एक आदमी अपनी गाड़ी में कहीं दूर जारहा है, रास्ते में उसकी गाड़ी पंचर हो जाती है, वहीं एक पंचर की दुकान है,

पंचर निकालने वाला उस गाड़ी का निरक्षण करता है और कहता है की बहुत ही छोटा सूराख़ है, अगर सिर्फ हवा भरोगे तो गाड़ी पचास किलो मिटर जा सकती है, लेकिन अगर पंचर निकालोगे तो हर पचास किलो मिटर पर हवा भरने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, ज़रा बतलाईए वह भला मानस क्या करेगा ???

जिसे ज़रा सी भी शुध्द बुध्दि है वह सिर्फ हवा भरने की बजाय गाड़ी का पंचर ही निकालेगा, इसी को कहते है न रहे बांस न बजे बांसुरी |

अगर यह बात आप के समझ में आगयी तो आईए हम ज़रा बुरके के बारे में समझें की वह किस तरह महिला को छेड़ छाड़ से बचाता है ?? जान लिजिए के महिला का आकर्षन ही छेड़ छाड़ का परीणाम है, यानी किसी महिला की छेड़ छाड़ तब ही होती है जब कोई नर किसी नारी से आकर्षित होता है, इंसान तब ही आकर्षित होता है जब स्त्री की सुंदरता उसे भाती है, और यह तब होता है जब स्त्री अपनी सुंदरता को पर्दे में नहीं छुपाती, अगर स्त्री पर्दा कर ले तो उसकी सुंदरता छुप जाएगी, जब सुंदरता छुप जाएगी तो कोई आकर्षित नहीं होगा, और जब कोई आकर्षित ही नहीं होगा तो छेड़ छाड़ की समस्या ही पैदा नहीं होगी, इसीलिये आप ने देखा होगा की बुरका परिधान की हुयी महिलाएं रोड़ साईड़ रोमिओ की छेड़ छाड़ से बच जाती हैं, यानी बुरका समस्या का ऐसा समाधान है की आप समस्या को जड़ से समूल नष्ट कर देते हैं|

२. दुसरे अपराध से रक्षा का साधनः

बुरका बहुत सारे दुसरे अपराध से भी बचाव का साधन बनता है, संक्षिप्त में अभी आप ने देखा की बुरका आकर्षन ख़त्म करता है|

"आप ने ऐसा अपराध ज़रूर सुना होगा की किसी व्यक्ति ने एक महिला कि हत्या कर दी, इसलिए की उस महिला ने उस के प्यार के प्रस्ताव को ठुकरा दिया था| क्या आप ने सोचा यह अपराध का मूल कारण क्या है ??"

कारण यह है की उस मर्द ने इस महिला को देखा, महिला बुरके अथवा पर्दे में न थी लिहाज़ा उस की सुंदरता उसे भा गई, फलस्वरूप उस महिला को पाना उसके जिन्दगी का सब से बड़ा उद्देश्य बन गया, अब वह उस महिला के सामने अपना प्रस्ताव रखेगा, महिला को कोई आज़ादी नहीं की ना कहे और अगर ना कहा तो यह प्यार में व्याकुल व्यक्ति उस महिला की जान ले लेगा|

देखा आप ने किस तरह यह आकर्षन इस महिला की जान पर बन आया वहीं उस व्यक्ती को हत्यारा बना दिया, अगर यह आकर्षन न होता तो एक जान बेकार न जाती और एक शख़्स अपराधी न होता !!

शायद आप सहमत नहीं हुये और आप सोच रहे होंगे की हो सकता है वह व्यक्ति अपना प्रस्ताव वापस ले कर चुप चाप चला जाय और कोई

अपराध करने की न सोचे, हम कहेंगे की आप सहीही हैं और ऐसा भी हो सकता है लेकिन याद रखें कि ऐसा बहुत कम होता है, इसलिए की नर की मानसिकता ही कुछ ऐसी है की वह नारी से हार बार्दाश्त नहीं कर पाता, नारी का प्रस्ताव क़बूल न करना नर को क्रोधित कर देता है और वह उसे अपनी हार समझता है, लिहाज़ा इस हार का बदला वह उस महिला की हत्या कर के लेता है|

इंसान की मानसिकता यह है की वह धोखा, नुक्सान, खत्रा इत्यादि कतई नहीं चाहता, अगर आप कहीं जारहे हैं, और आप के सामने तीन रास्ते आ जाते हैंः अ, ब, क, और यदी आप से कहा जाए की "अ" रास्ते जाओंगे तो ३० % धोखा है, "ब" रास्ते में २० % धोखा है, और "क" रास्ते में ० % धोखा है तो आप और हर अक़्ल रखने वाला "क" रास्ते को अपनायेगा| इस के विपरीत अगर आप से कहा जाय की "अ" रास्ते में ८० % फायदा है, "ब" रास्ते में ६० % और "क" रास्ते में २० % तो आप अ रास्ते को अपनायेंगे, ऐसा क्यों ???

इसलिए की इंसान की मानसिकता यह है की वह कम से कम बल्कि ना के बराबर नुक़सान एवं खत्रा चाहता है, लेकिन फायदा अथवा लाभ ज़्यादा से ज़्यादा चाहता है|

अब आप सोचिए की ज़्यादातर मर्द, औरत की 'ना' को हार समझते है और इस हार को जीत में बदलने के लिए उस की हत्या कर देते हैं| लेकिन हो सकता है कूछ न भी करे, और 'ना' सुन कर चुप चाप रहे, अर्थात ९०% धोखा है तो क्या यह ९०% धोखा उठाना बुध्दिमानी है ??? अगर मान लो मामला इस के विपरीत है और धोखा १०% है तब

भी उसे अपनाना बुध्दिमानी नहीं|

मतलब यह है कि कोई प्रेमी उस का प्रस्ताव स्वीकृत ना करने पर कुछ करे ना करे लेकिन धोखा व ड़र तो रहता ही है| कभी ऐसा होता है की इस पाग़ल प्रेमी को समझाने या सबक़ सिखाने महिला के घर वाले, बाप या भाई आते हैं, जिस के नतीजे में हाथापाई होती है और फलस्वरूप कभी यह पागल प्रेमी उन्हें मार देता है, या कभी अपनी जान गंवा बैठता है|

यह कोई मज़ाक़ नहीं बल्कि इस त़रह़ के अपराध आये दिन होते रहते हैं जो लोग अख़बारात पढ़ते हैं और अपराधों पर नज़र रखते हैं वे इन चीज़ो से भली भांति परीचित हैं|

अगर आप इस मामले को पुलिस के नज़रये से देखें तो, पोलिस इस पागल प्रेमी को डराती, धमकाती है, लेकिन प्रेम का यह भुत निकालना इतना आसान नहीं होता|

आज कल तेज़ाब (Acid) फैकने के अपराध में भी काफी वृध्दि हुई है, मानसिकता वही है हार को जीत में बदलना, यानी जिस ने मुझे ना कहा वह किसी और के लायक़ ना रहे, मर्दजाती कभी यह दुसरा रास्ता भी अपनाती है| इस गंभीर अपराध के बाद उस महिला का जीवन नर्क बन जाता है़, यह जीवन उसे मृत्यु से भी ज़्यादा भयावह लगता है और जिने की सारी आशाएं लुप्त होजाती हैं|

इन सारी समस्याओं का एक ही कारण है "आकर्षन", और आकर्षन पर्दे से ख़त्म हो जाता है, अर्थात बाद में जितना सब कुछ होना था वह शुरू में ही आप ने खत्म कर दिया, समस्या को समुल नष्ट कर दिया|

३. बलात्कार से रक्षा:

बलात्कार का प्रमुख कारण भी आकर्षन है, बलात्कार करने वाला कभी उस महिला से परिचित होता है और कभी अपरिचित, जिस महिला को जानता है उस के प्रति वह आकर्षित होता है, फिर कहानी वही होती है, प्रेम का प्रस्ताव और ना मानने पर बलात्कार ।

वे लोग जो ऐसी महिला का बलात्कार करते हैं जिसे वो जानते तक नहीं उस की वजह भी आकर्षन होती है या बीमार मानसिकता, आकर्षन का इलाज तो पर्दा है, लेकिन बीमार मानसिकता का क्या किया जाय ?? और क्या पर्दा इस बीमार मानसिकता के लिए भी इलाज हो सकता है ??

जी हां पर्दा बीमार मानिसकता का भी इलाज है, इसे समझने के लिए आप को यह समझना पड़ेगा की यह बीमार मानसिकता कैसे पैदा होती है ??

अगर हम कहें की बीमार मानसिकता की वजह भी आकर्षन है तो शायद आप को मज़ाक़ लगे,

लेकिन हमारी बात ज़रा ग़ौर से सुनिये ः अब तक हम बाता आये हैं की प्रेमी आपने प्रेम का प्रस्ताव किसी महिला के सामने रखता है, उस महिला के इन्कार करने पर यह प्रेम रोगी उस महिला का या तो जीवन

समाप्त करता है, या उसके चेहरे पर तेज़ाब डालता है, या उस महिला का बलात्कार करता है, लेकिन कभी कभी कहानी यहीं ख़त्म नहीं होती | कभी कोई प्रेमी इस से आगे बढ़ कर पुरी नारीजाती से ही नफ़रत करना और पुरी नारीजाती से बदला लेना शुरू कर देता है, फिर जहां भी उसे अवसर मिलता है नारीजाती से आपनी कटुता बलात्कार एवं हत्या के रूप में प्रकट करता है, अगर आप हमारी बात से सहमत नहीं हैं तो बलात्कार एवं हत्या करने वाले Psychopath की कहानियां पढ़िये |

अक्सर Psychopath इस रोग का शिकार इसलिए होते हैं की कभी उन्हें किसी महिला ने प्रेम में धोखा दिया होता है, या कभी उन के प्रेम को कोई महिला अपनाती नहीं है, यह मानसिक सदमा वे झेल नहीं पाते हैं, परिणामस्वरूप वे मानसिक अपराधी बन जाते हैं |

“ अब आप सोचिए आकर्षन ना होता तो प्रेम न होता, प्रेम न होता तो यह लोग मानसिक रोगी न बनते, मानसिक रोगी ना होते तो अपराधी न बनते, अर्थात आकर्षन इस रोग की जड़ है, और पर्दा आकर्षन समाप्त करता है, यानी आकर्षन लुप्त, मानसिक रोगी लुप्त ”

आज कल महिलाओं के कम होते कपड़े भी बलात्कार का एक कारण है | हम जानते हैं की आज कल यह बात बहुत फैली है की बलात्कार का कपड़ों से कोई संबंध नहीं है | इस बात में कितनी मुर्खता है इस का अनुमान इसी प्रश्न से होता है की विश्व में सब से ज़्यादा बलात्कार किस देश में होते हैं ?? उत्तर है अमेरिका, इंग्लेंड और स्विडन | प्रश्न है क्यों ??? उत्तर इस के इलावा और कुछ नहीं की वहां महिलाएं कपड़े तन डाकने के लिए नहीं बल्कि तन को निखार कर दिखाने के लिए पहनती हैं |

मर्द की रचना ही ऐसी है की वह स्त्री की तरफ़ आकर्षित होगा औरत की रचना भी ऐसी है की वह मर्द की तरफ़ आकर्षित होगी लेकिन दोनों के स्वभाव में बहुत अंतर है | औरत का आकर्षन तीव्र नहीं होता, उस में शर्म बहुत ज़्यादा होती है, वह खुले तौर पर अपनी इच्छा प्रकट नहीं करती और ताक़त के ऐतबार से वह कमज़ोर भी होती है | जब्कि मर्द का आकर्षन तीव्र होता है, उस में शर्म का प्रमाण औरतजाती से कम होता है, और फिर वह नारी के मुक़ाबले ताक़तवर भी होता है |

इन प्रमाणों को सामने रख कर सोचिये की अगर एक मर्द के सामने स्त्री ऐसे कपड़े में आजाय जिस से उस की सोयी हुयी आशाएं जाग जाती हैं, फिर इस शर्मनाक कार्य करने में उसे कोई शर्म नहीं आती, औरत के कम कपड़ों की वजह से उस का अपने उपर का नियंत्रण भी ख़त्म हो जाता है, नतीजा क्या होगा इसका अनुमान आप खुद कर सकते हैं।

उस की वहशत का शिकार वह मासूम नारी बन जायेगी, जिसे कुछ भी शुध्द बुध्दी है, और वह मीडिया के भ्रम में नहीं आया, उस का उत्तर यही होगा कि अमेरिका में बलात्कार का प्रमाण ज़्यादा होने का कारण महिलाओं का कम कपड़े पहनना है।

कपडो़ के संबंध में एक दुसरा तर्क भी हमारी नारी जाती को पाठ कराया जाता है वह यह की भले नारी कम कपड़े पहने यह उसकी आज़ादी है उस की आपनी इच्छा है लिहाज़ा उसे कोई न सिखाये कि उसे क्या पहनना चाहिये, बल्कि मर्द का काम है की वह नारी का आदर करे, फिर नारी चाहे जैसे कपड़े पहने।

देखिए किस तरह़ से हमें मुर्ख बनाकर हमारी संस्कृति हम से छीनी जारही है, यह तर्क भी कितनी मुर्खता से भरा है, इस का पता अभी आप को लग जाएगा, हम इन तमाम महिलाओं को जो इस तर्क पर विश्र्वास करती हैं और जो लोग इस किताब को पढ़ रहे है उन्हें कुछ कहानीयां सुनाते हैं, ताकी हम इन कहानियों से कुछ सबक़ लें ः

एक गांव में कुछ पहाड़ियां थीं जिन में से एक पहाड़ी पर कुछ गडेरियें बकरीयां चराया करते थे, उन्होंने इस पहाड़ी के चारो तरफ मज़बूत दीवारें बनायी थीं ताकि कोई भेड़िया किसी भी ओर से अंदर ना आये।

उस पहाड़ी से लग कर एक दुसरी पहाड़ी थी जहां बहुत सारे भेड़िये रहते थे, इन भेड़ियों की भुखमरी के दिन थे इसलिए की पड़ोसी पहाड़ी पर खाने के लिए बकरीयां तो थीं मगर इन गड़ेरियों के सुरक्षा कवच को भेदना जान जोखिम में डालना था।

बकरीयां इस पहाड़ी को देखती,

उस पर उगी ताज़ी घास को देखती, मन में बात आती की वहां जाय, लेकिन गड़ेरिया उन्हें वहां जाने न देता, अंत कुछ बकरीयों ने गड़ेरिये की नज़र बचा कर वहां जाने की ठानी और अपनी इच्छा सभी बकरीयों के समक्ष रखी, इस झुंड में कुछ समझदार, बुध्दिमान बकरीयां भी थीं, जब उन्होंने इस इच्छा को सुना तो कहा ः " वहां भेड़िये हैं, तुम घास का आनंद तो ले लोगी लेकिन वह भेड़िये तुम्हारे मांस का आनंद लेगें इसलिए वहां जाने का विचार अपने मन से निकाल दो "

इस पर वह बकरीयां जो उस पहाड़ी पर जाने का निश्चय कर चुकी थीं यह तर्क देने लगी की ः " वहां जाना हमारी स्वत्रंता है, हम जहां चाहे जायें और घास चरें अगर भेड़ियों को हमारे आने से कठिनाई हो रही है तो उन का कर्तव्य है की वो हम से दुर रहे, अपनी नज़रे नीची रखें और हमारा आदर करें "

फिर क्या था वह बकरीयां भेड़ियों की पहाड़ी पर चली गयी, जैसे ही बकरीयां वहां पहुंची भेड़ियों ने उन्हें अपना भक्ष्य बना लिया, बकरीयों ने जब मृत्यु को देखा तो उन के सारे तर्क धरे के धरे रह गयें|

***   ***   ***

एक गांव में शाम नाम के एक धनवान रहते थे, उन के पास हिरे, जवाहरात के कई अमुल्य आभूषन थे जिन के लिए उन्होंने खास तिजोरियां बनायी थीं जिन्हें तोडना चोरों के लिए असम्भव था|

किसी ने शाम सेठ से कहा ः " आप अपने आभूषन की इतनी रक्षा क्यों करते हैं ?"
इस पर शाम सेठ ने कहा ः " चोरों से रक्षा के लिए वरना चोर मेरे आभूषन ले जाएंगे "
इस पर उस आदमी ने कहा ः " आप आपने आभूषन की इतनी चिंता ना करें तिजोरियां खुली छोड दें आखिर चोरों का भी कर्तव्य है कि वे आपके आभूषन ना चुराय "

इस मुर्ख का यह तर्क शाम सेठ को भागया और उन्होंने तिजोरियां खुली रखीं फिर क्या था एक दिन शाम सेठ के घर चोरी हो गई और चोर सारे आभूषन ले गये|

***　　　***　　　***

इन दोनों कहानियों से हमे क्या सिख मिलती है ???

यह की कुछ तर्क सुनने सुनाने तक ही ठीक लगते हैं, वास्तविक जीवन में वह अर्थहीन होते हैं, जिस त़रह़ बकरीयों का यह तर्क "वहां जाना हमारी स्वत्रंता है, हम जहां चाहे जायें और घास चरें अगर भेड़ियों को हमारे आने से कठिनाई हो रही है तो उन का कर्तव्य है की वो हम से दुर रहे, अपनी नज़रे नीची रखें और हमारा आदर करें" | वास्तविक जीवन में मुर्खता का प्रमाण सिध्द है| ठीक उसी त़रह़ से शाम सेठ का उस मुर्ख के तर्क को मानना बेवकुफी का कार्य स़ाबित हुआ | वास्तविकता में जब समस्या का सामना करना पड़ा तो दोनों तर्क अर्थ हीन थे, ठीक इसी त़रह़ से यह तर्क की हम कपड़े किसी भी प्रकार के पहनें हमारा आदर करना मर्दजाती का काम है वास्तविक जीवन में अर्थहीन है और जब समस्या समक्ष होगी तो यही तर्क धरे के धरे रह जायेंगे|

हम यह नहीं कहना चाहते की सभी मर्द बुरे होते हैं, लेकिन यह ज़रूर कहेंगे की कुछ मर्द इंसान के रूप में भेड़िये ज़रूर होते हैं जो स्त्रियों के भोलेपन का फायदा उठाना चाहते हैं|

जिस प्रकार भेड़िये का बकरी को भक्ष्य बनाना स्वाभाविक है, और चोर का मुल्यावान वस्तु चुराना स्वाभाविक है ठिक उसी तरह से मर्दजाती का कम कपड़े पहनी स्त्री की तरफ़ आकर्षित होना स्वाभाविक है, यह ऐसा अटल सच है जिसका इन्कार शायद ही कोई कर सकता है|

इस मर्दजाती में मौजूद भेड़िये तो आकर्षित होंगे ही, यह भी हो सकता है की कुछ सरल व सभ्य मनुष्य भी आकर्षित होजाय क्या पता, समय के साथ मरी पड़ी उनकी आशाएं जाग उठें और वह अपना नियंत्रण खो दें|

यह कोई हवाई बाते नहीं ऐसा हो सकता है, बल्कि होता है, आप ने टिवी देखने वालों पर कभी गौर किया, अगर कोई रोने का दृश्य हो तो वह रोने लगते हैं, हंसने का दृश्य हो तो हंसने लग जाते हैं, ज़रा बतलाऐं कम कपड़े पहने कोई नारी उनके सामने आजाय तो उन की विकट इच्छा क्यों नहीं प्रभावित होगी ???

अंत में एक प्रश्न पर हम इस वार्तालाप को ख़त्म करते हैं, जो महिलाएं यह कहती हैं की हम कम कपड़े पहनेंगे मर्दजाती आपनी नज़र नीची रखे और हमारा आदर करे, हम उन से पुछना चाहेंगे, क्या वह आंख पर पटटी बांधे हायवे पर चल सकती हैं ?? अगर नहीं तो क्यों नहीं ? अगर उनका उत्तर यह है की कोई गाड़ी उन्हें कुचल देगी, तो हम

कहेंगे आप जैसे चाहे चलें, आंख खोल कर या आंख बंद करके, चालक का काम है की गाड़ी देखकर चलाये !!! हो सकता है की वह कह उठें, भले चालक का काम गाड़ी देख कर चलाना है लेकिन हमारा भी कर्तव्य है की हम देखकर चलें, चालक के भरोसे रहना मुर्खता है, इस पर हम ज़रूर कहेंगे, आप ने बिल्कुल सहीह़ कहा, लेकिन इस मापदंड को अपने कम कपडे पहनने की शैली पर भी तो लागू कीजिये, इस प्रकार की भले मर्दजाती का कर्तव्य है की वह नारी का आदर करे लेकिन आपका भी तो कर्तव्य है कि आपनी रक्षा के लिए अपने तन को अच्छी त़रह से डांप लें और सिर्फ मर्दो के भरोसे रहना मुर्खता है|

बुरका और शंकायें

१. बुरका उन्नति के लिए रूकावट ः

कुछ लोग बुरका धारन की हुई महिलाओं पर कुछ शंकाएं उपस्थित करते हैं जैसे बुरका महिलाओं की उन्नति में रूकावट है !!!
इस शंका पर हमें बहुत ही आश्चर्य होता है !!!
क्या इन शंका उपस्थित

करने वालों में से कोई हमें बतायेगा की किस प्रकार बुरका महिलाओं की उन्नति में रूकावट है ???

इस विश्व में उन्नति वही लोग करते हैं जो ज्ञान हासिल करते हैं, जो अज्ञानी हैं वह उन्नति नहीं करते चाहे फिर वह बुरका पहने या ना पहने अर्थात उन्नति का संबंध बुरके से ज़रा सा भी नहीं, फिर इस शंका पर हम आश्चर्य क्यों ना करें ???

रही बात ज्ञान हासिल करने की तो इस्लाम ने मर्द, औरत सभी को ज्ञान हासिल करने का आदेश दिया है | इस्लाम यह कहता है ज्ञान हासिल करना सारे मुसलमानों पर अनिवार्य है, ज्ञानी और अज्ञानी कभी बराबर नहीं हो सकते, (ज्ञान हासिल करने वालों के लिए सभी प्राणी प्रथना करते हैं यहां तक की समंदर की मच्छलियां भी प्रथना करती हैं,) अगर ज्ञानी अपना ज्ञान लोगों को देता है तो उस का पुरस्कार उसे मरने के बाद भी मिलता रहता है, ज्ञानी इस पृथ्वी के रक्षक हैं (अगर एक भी ज्ञानी इस धरती पर ना बचे तो इस विश्व का अंत निकट है)

आप इतिहास देखिये, इन्हीं आदेशों के परिणामस्वरूप मुसलमान एक ज़माने में ज्ञान के मामले में बहुत आगे थे, बुरका धारन की हुयी महिलाएं भी ज्ञान हासिल करती थीं जब्कि इस्लाम से पहले औरतों को ज्ञान हासिल करना वर्जित था, इस्लाम ने महिलाओं को ज्ञान हासिल करने का अधिकार दिया परिणाम यह था की आइशा, उम्मे सुलैम, उम्मे सलमा, मैमुना, जुवैरिया, हाफ़सा रज़ी अल्लाहुअन्हुन्न जैसी महिलाएं ज्ञान में पुरूषों से भी आगे बढ़ीं|

ज़रा बतलाइए यह इन बुरका परिधान की हुयी महिलाओं की प्रगति थी या नहीं थी ??? प्रगति थी, ज़रूर थी तो बतलाइए बुरका प्रगति के लिए रूकावट कैसे बना ???

२. बुरका पिछड़ेपन का प्रतीक ः

कुछ लोग यह शंका उपस्थित करते हैं की बुरका धारन की हुयी महिलाएं पिछड़ी हुयी हैं !!!!!

हम कहते है यह शंका भी बहुत ही अचरज में डालने वाली है बल्कि

यह शंका ऐसी है की मानो गंगा उल्टि बह रही है !!!

ज़रा विचार कीजीए मनुष्य पर एक वक़्त ऐसा था की उसे बनमानस कहा जाता, यानी वह जंगलों में रहता, पहनने के लिए उस के पास कुछ ना था, फिर क्या नर, क्या नारी, हर एक अपने शरीर को बड़ी मुश्किल से पत्तियों व झाड़ियों से छुपा पाते, फिर कपड़े बनाना इंसान ने सीख लिया, लेकीन फिर भी पर्याप्त मात्रा में कपड़े उपलब्ध ना थे, औरत व मर्द सिर्फ अपने गुप्त अंगों को ही छुपा पाते, फिर ज़माना आगे बढ़ा और आज यह ज़माना है कपड़े की रेलपेल है, अब मर्द व औरत सिर्फ अपने गुप्त अंग ही नहीं बल्कि पूरे शरीर को डांपते हैं, अब बतलाइए बुरका पहनना इस प्रगतिशील दौर का प्रतीक है, या पिछड़े हुये युग का ?? और फिर यह भी की कम कपड़े पहनना पिछड़े हुये होने का प्रतीक है या इस दौर का ???

३. बुरका अत्याचार का प्रतीक ः

बुरका पहनने वाली महिलाएं या तो समझदार होती हैं या नहीं होतीं, जो समझदार होती हैं वह बुरके के फायदे जानती हैं जो अभी हम ने बतलाएं, और बुरका अपनी स्वइच्छा से पहनती हैं, तो यह उन पर अत्याचार कैसे हुआ ??

जो समझदार नहीं,अर्थात अभी उन में अल्हड़पन है और वह बुरका अपनी स्वइच्छा से नहीं पहनती हैं तो क्या उन्हें बुरका पहनाना उनपर अत्याचार करना है ??

अगर "हां", तो हम में से सभी अत्याचारी हैं, इसलिए की हम हमारे अल्हड़ बच्चों को सारी इच्छाएं पूरी करने की अनुमती नहीं देते !!!

कुछ बच्चे इसी अल्हड़पन की उम्र में सिगरेट पीना चाहते हैं, शराब पीना चाहते हैं, फिर क्या हम उन्हें रोकते नहीं, अगर "हां", तो क्या उन्हें उन की इस इच्छा पुर्ती से रोकने पर हम अत्याचारी बन गये गए ?

नहीं, कभी नहीं | कभी इसी आयु के बच्चे बीमार होते हैं, डाक्टर उन्हें दवा देते हैं, अक्सर बच्चे वह दवा नहीं पीते, मां
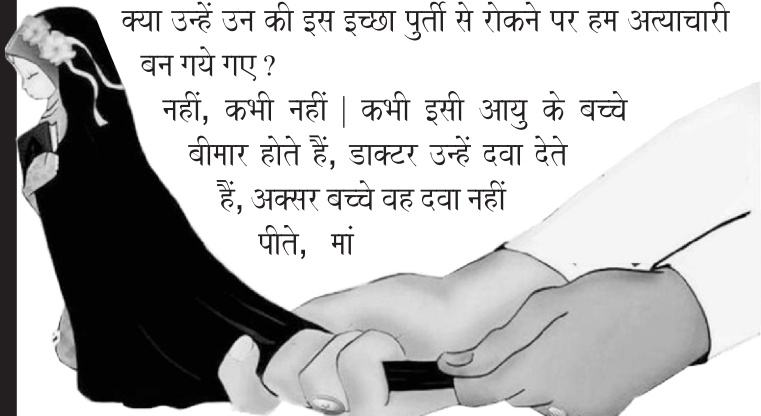
बाप कभी कभी ज़बरदस्ती उन्हें वह दवा पीलाते हैं, तो क्या यह अत्याचार हैं ?? इसलिए की बच्चे को उस की इच्छा के विपरीत दवा पीलाई गयी !!!

नहीं कदापि नहीं, इन इच्छाओं की पुर्ती के दुष परिणामों से मां बाप परिचित होते हैं, इसलिए उनका ज़बरदस्ती करना अत्याचार नहीं बल्कि अपने बच्चों के प्रति प्रेम है, ठिक इसी त़रह़ से कोई बच्ची अल्हड़पन की वजह से बुरके का विरोध करे, लेकिन मां बाप डांट कर उसे बुरका पहनाएं तो यह अत्याचार नहीं बल्कि मां बाप का अपने बच्चे के प्रति प्रेम है|

४. बुरका यानी अधिकार से वंचना ः

बुरके का अधिकारो से क्या संबंध, बल्कि इस्लाम ने स्त्री को ऐसे मूल अधिकार दिये हैं जिन से महिलाएं वंचित थीं| इस्लाम ने महिला को जीने का अधिकार दिया, इस्लाम से पहले बेटी को पैदा होते ही बेटी होने की वजह से ज़मीन में दफन किया जाता था, भृणहत्या के रूप में आज भी इस प्रथा को आप देख सकते हैं, इस्लाम ने इस प्रथा को ख़त्म किया, बेटी को बेटे ही की त़रह़ प्रेम देने के लिए कहा और बतलाया की बेटीयों का अच्छा पालनपोषन करने पर जन्नत मिलेगी, मां व बाप की संपत्ति में बेटी को हिस्सा देने का आदेश दिया, बेटी की इच्छा के विपरीत उस की शादी कराना अवैध क़रार दिया, मां की सेवा पर जन्नत का वादा किया गया, बेटे की संपत्ती में मां को हिस्सेदार बनाया, पत्नी को शादी करने पर महेर देने के लिए कहा गया, पती की

संपत्ति में पत्नी को हिस्सेदार बनाया | पहले सिर्फ पती को यह अधिकार था की वह चाहे तो पत्नी से विभक्त हो सकता था, इस्लाम ने यह अधिकार पत्नी को दिया, घर का खर्च पती के सर पर डाल दिया और पत्नी को यह अधिकार दिया की वह स्वयं का पैसा जहां चाहे खर्च करे, घर खर्च की ज़िम्मेदारी उस की नहीं, रेशम का कपड़ा मर्द पर हराम किया लेकिन औरत को रेशम पहनने का अधिकार दिया, सोना मर्द पर हराम किया लेकिन औरत को सोना पहनना वैध क़रार दिया |

इस्लाम ने औरतों को यह सारे अधिकार दिये हैं, इस के बाद भी अगर कोई यह कहे की बुरका अधिकारों से वंचना है तो उसे क्या कहा जा सा क ता है ??

समाप्ती
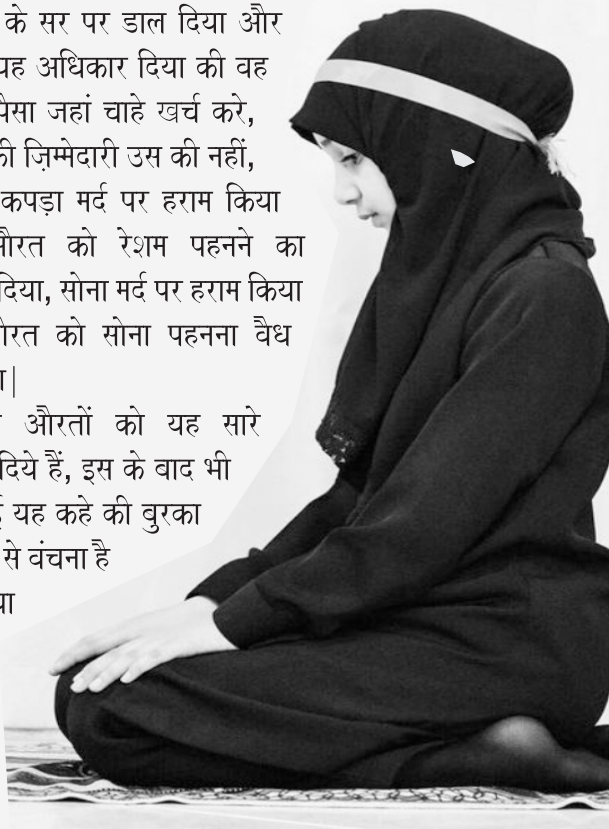
बुरका किस प्रकार नारी की रक्षा करता है हम ने उस का विवरण दे दिया, बुरका नारी के खिलाफ हो रहे अत्याचारों को आधे से अधिक कम करता है| अगर इस्लाम के इन सारे सुत्रों को अमल में लाया जाय तो शायद स्त्री पर अत्याचार ही न हो,

१. स्त्री अधिकतम काल घर में रहना
२. पराये पुरुष के साथ अकेल ना होना
३. दूर और सुनसान इलाके में अकेले ना जाना
४. सौम्य स्वर में बात ना करना
५. बुरका

इन ५ सूत्रों के बाद भी अगर किसी स्त्री पर शारिरिक अत्याचार होता है तो अत्याचारी कठोर सज़ा का हक़्क़दार है|

स्त्री सुरक्षा हेतु दिये गये इन सूत्रों को आपनाये बगैर अगर हम अपराधी की सज़ा कठोर करने की बात करें, ताकि स्त्री के खिलाफ अत्याचार कम हों तो यह प्रयास असफल होगा और स्त्री के खिलाफ हो रहे अत्याचार कम नहीं होंगे|

अगर हम वास्तविक रूप से यह चाहते है की नारी के खिलाफ अत्याचार ख़त्म हो जाय, तो हमें कठोर शिक्षा के साथ साथ नारी सुरक्षा हेतु दिए गये इन सूत्रोंको भी अपनाना पड़ेगा|

अपनी भाषा में पवित्र कुरआन की नि:शुल्क कॉपी को आर्डर करने के लिए अभी कॉल करें, यह भेंट सारे धर्म और जाति के लिए उपलब्ध है।

आर्डर के लिए आप को सिर्फ अपना

१. नाम

२. मोबाइल नंबर

३. घर का पोस्टल एड्रेस

४. कुरआन की भाषा

निचे दिए गए मोबाइल नंबर पर कॉल या एस एम् एस के द्वारा भेजना है और पवित्र कुरआन आपके घर तक नि:शुल्क पहुंचाया जायेगा।

अभी कॉल करें:

+91-8767333555 / 9920370659

www.albirr.in

81/82, Kotwala House, Dr. Mascarenhas Road,
Sitafal Wadi, Mazgaon, Mumbai - 400 010. INDIA